[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3500

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वैश्वीकरण के युग में संचार साधनों के माध्यमों से भारतीय संगीत की बढ़ती लोकप्रियता

प्रो. विनीता वर्मा
विभागाध्यक्ष वाद्य संगीत
म. ल. बा. शा. क. स्ना. महा. इन्दौर

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।"

अर्थात् – 'हे परम प्रकाशक परमात्मा सद्विचार सभी दिशाओं में आयें।

हमारे पूर्वज कितने दूर दृष्टा थे, यह इस बात का द्योतक है कि, जिस वैश्वीकरण के महत्व को शेष विश्व के लोग आज समझ पाये हैं, उसे हमारे मनीषियों ने बहुत पहते ही निर्धारित कर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की अवधारणा को हमारी संस्कृति का आधार बनाया।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में हुए तकनीकी विकास एवं संचार क्रान्ति के कारण समस्त विश्व ही एक ग्राम के समान है, क्योंकि संचार साधनों ने इसे इतना जोड़ दिया है कि पूरी दुनिया ही चंद कदमों एवं कुछ घंटों की दूरी में सिमट गई है और विश्व व्यापीकरण की प्रक्रिया से पश्चिमीकरण प्रक्रिया में तेजी आई है।

इसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप आज भारतीय संगीत के पटल पर जो शब्द सर्वाधिक सुनाई दे रहा है, वह है– ''ग्लोबल म्यूज़िक''। यह वह संगीत है, जो वैश्विक स्तर पर सुना जाता है और जिसका उत्पादन–प्रकाशन और वितरण संगीत से संबंधित उद्योगों से होता है।

'ग्लोबलाइजेशन, भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण का अर्थ है– ''विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण।'' ब्लैक बेल डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार– 'भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत विभिनन समाजों का सामाजिक जीवन, राजनीति और व्यापारिक क्षेत्र से लेकर संगीत, वेशभूषा एवं जनमिडिया के क्षेत्रों तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यन्त द्रुत गति से प्रभावित हुआ है। वैश्वीकरण अथवा भूखण्डलीकरण जैसी कल्पनाएँ भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है।

संगीत के माध्यमों की रूपरेखा समय–समय पर परवर्तित होती रही है। पहले संगीत के जीवन्त कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते थे, मात्र मंच पर ही कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करता था। बाद में ग्रामोफोन रिकार्ड्स के रूप में हम संगीत सुनने लगे। उसके बाद ऑडियो/वीडियो कैसेट्स बाजार में आये। आज सी.डी./डी.वी.डी./वी.सी.डी./कम्प्यूटर इत्यादि का चलन बढ़ा है। एक अन्य माध्यम भी विदेशों में प्रारंभ हुआ, वह है ''रिंगटोन पद्धति''। जिसमें प्रसिद्ध कलाकारों (बाख, बीथोवेन) इत्यादि की तीन मिनट की संगीत प्रस्तुति को डाउनलोड किया जाता है। यह संस्कृति अभी भारत में सामने नहीं आई है। तात्पर्य यह है कि, आने वाले समय में तकनीकी यह तय करेगी कि हम भविष्य में संगीत किस रूप में सुन सकेंगे।

भारतीय संगीत के इतिहास पर यदि दृष्टिपात करें, तो यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि समय–समय पर भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार देश–विदेशों में होता रहा है। भारत के विभिन्न कलाकार अपने कला–प्रदर्शन के हेतु विभिन्न देशों में कोने–कोने में जाते रहे हैं।

मिनिस्ट्री ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एण्ड कल्चरल अफेयर्स के संबंध में कहा जा सकता है– ''इसमें देश–विदेश से सांस्कृतिक संबंध बनाये रखने एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार बढ़ाने के लिये कार्य किये जाते हैं। इस विभाग में अनेक उपविभाग हैं, जिसमें एक्सटरनल कल्चरल रिलेशन्स, एक महत्वपूर्ण उपविभाग है। इसके अन्तर्गत विदेशों से सांस्कृतिक मण्डल को आमंत्रित किया जाता है एवं भारत के सांस्कृतिक मण्डलों को विदेश भेजा जाता है। इस कार्य के लिये उनके पास एक इनफॉर्मेशन ब्यूरो (सूचना केन्द्र) है, जहाँ से आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त हो सकती है। इस सांस्कृतिक विभाग के माध्यम से अब तक सैकड़ों कलाकार विदेश जा चुके हैं। यह परम्परा सामान्य परिवर्तनों सहित आज भी प्रचलित है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारत में निर्मित ''हाई–फाई म्यूजिक सिस्टम'' इतने मोहक मॉडलों में आने लगे है कि, अब खरीददार की नजर उन पर ठहरती है और वह विदेशी मॉडलों की बजाय भारतीय सिस्टम खरीदने लगा है। दूरदर्शन जनसंचार का एक सबल माध्यम है। आज संगीत का प्रत्येक पहलू दूरदर्शन तक पहुँच चुका है। ''टेलिविजन को आम लोग मनोरंजन के लिए देखते है। परंतु संगीत–जिज्ञासु अपनी विधानुरूप उसकी उपयोगिता का उपयोग करते है।'' आज दूरदर्शन संगीत के संचार का प्रमुख माध्यम है।

मनुष्य के विकास–क्रम के कलम, दवात, कागज, स्याही आदि अपने समय के क्रांतिकारी तकनीक रहे हैं। आज आधुनिक प्रिन्ट आया तो जनसंचार का कायाकल्प हो गया। समाज बदल गया। यह सूचना तकनीक और मीडिया का असर है कि, आज संगीत की स्थिति वैसी नहीं दिखती जैसी पूर्व के दर्शकों में दिखी। हाँ, इतना आवश्य है कि, प्रिन्ट मीडिया, रेडियों, टी. वी., फिल्मों आदि की की स्थितियाँ अलग–अलग होंगी। ''यह सच है कि, देश में रेडियो की तुलना में टेलीविजन का प्रसार विस्फोटक रूप में हुआ। इस आकर्षक माध्यम की एक अपनी मोहकता है, उसकी एक अपनी वशीकरण–शक्ति है। ..... पर, भारत से बाहर टेलीविजन और रेडियो विश्व के प्रमुख देशों में समानान्तर कार्य कर रहे है। लोकप्रिय जन–संचार की एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा वहाँ मिलेगी।''

विज्ञापन के क्षेत्र में भी संगीत की तकनीकी उपयोगिता द्रष्टव्य है। जहाँ तक कि, संगीतकार कम्पनियों के ब्रान्ड एम्बेसेडर हो गए। यथा– वहा! ताज! अर्थात् प्रख्यात तबला वादक उस्ताद जाकिर हुसैन।

आधुनिक युग के आरंभ से ही संगीत का भी आधुनिकीकरण किया है। ''कैसेट उद्योग ने संगीत को विस्तार दिया है। इलेक्ट्रॉनिक सामग्रियों में तेजी आई। कैसेट के पूर्व एवं कैसेट युग में द्विगुणित अन्तर आ गया। आज कैसेट बनाने वाली कंपनीयों की संख्या अनगिनत है। एच.एम.वी. का एकाकिधारी समाप्त हुआ। जी.सी.आई (ग्रामोफोन कंपनी ऑफ इण्डिया) का क्षेत्र संकुचित हो गया। आज के युग में संगीत को भी किसी एक ही प्रणाली से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। अतः कई वर्षों में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं ई–लर्निंग महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। आज संगीत से जुड़े अन्य व्यावसायिक विषय, यथा–रिकार्डिंग, प्रोडक्शन ऑफ साउण्ड, वॉयस कल्चर, म्यूजिक थेरेपी आदि का भी अध्ययन आवश्यक हो गया है।

आज शास्त्रीय संगीत अथवा राग संगीत के भी कई ई–मेल और वेबसाईट उपलब्ध है, जिससे देश के कई जाने–माने शास्त्रीय संगीतज्ञ जुड़े हुए है। The Net also has organisers. Facilities like chat link them with artists to fix or cancel dates and the time for programmes well in advance. For Kalakars, Ustads and Pandits, cyber yug's netmaya has cast a spell in the cyber gharana"

प्रसिद्ध वीणावादक सरस्वती राजगोपालन के कम्प्यूटर और इन्टरनेट को शास्त्रीय संगीत के लिए भी उपयोगी बताया है– कम्प्यूटर और इन्टरनेट के आने से एक जगह बैठकर ही बहुत सारे लोगों को शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

समकालीन कला– जगत पर एक नजर डालने से इस बात की सच्चाई का कुछ अनुमान हो सकता है। साहित्य में, एक स्तर पर चित्रकला, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक, धारावाहिक, फिल्म आलेख जैसे नए भाषायी माध्यम पुराने साहित्य को चुनौती देते नजर आते है। दूसरे स्तर पर, सस्ते पेपर बैंक संस्करणों, वीडियों कैसेटों, फिल्मों और कम्प्यूटरों के कारण लेखक की अपनी भाषा और शिल्प का स्वरूप भी बदलने लगा है।

स्पष्टतः है कि, तकनीकी संचार साधनों द्वारा भारतीय संगीत जिसकी स्वयं की विशेषता गहराई आध्याध्यित्मता एवं रचनात्मकता है एवं उसने विश्व के कोने–कोने में अपना परचम लहरा दिया है जिससे विश्व भर के समस्त संगीत प्रेमी भारतीय संगीत को सीख रहे है और उसे आत्मसार कर रहे है।

अतः आज के इस प्रौद्योगिकी युग में तकनीक द्वारा संगीत की विभिन्न विधाओं में उपयोगी प्रयोग किया जा सकता है। तथा इन संचार साधनों के माध्यम से नई पीढ़ी अपनी सांगीतिक शिक्षा एवं जिज्ञासा की पूर्ति कर आजीविका का भी निर्वहण कर रही है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संदर्भ –

1. *संगीत का समाजशास्त्र – सत्यवती शर्मा*
2. *संगीत एवं मनोविज्ञान – डॉ. किरन तिवारी*
3. *संगीत सुधा – डॉ. लावण्य कीर्ति सिंह ''काव्या''*
4. *संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में – डॉ. उमाशंकर शर्मा*
5. *अहा जिन्दगी – दिसम्बर 2012*